C.B.S.E

कक्षा : 10

विषय : हिंदी 'अ'

निर्धारित समय : 3 घंटे **अधिकतम अंक : 80**

सामान्य निर्देश:

1. इस प्रश्न-पत्र के चार खंड हैं- क, ख, ग, और घ।

2. चारों खंडों के प्रश्नों के उत्तर देना अनिवार्य है।

3. यथासंभव प्रत्येक खंड के उत्तर क्रम से लिखिए।

4. एक अंक के प्रश्नों का उत्तर लगभग 15-20 शब्दों में लिखिए।

5. दो अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 30-40 शब्दों में लिखिए।

6. तीन अंकों के प्रश्नों का उत्तर लगभग 60-70 शब्दों में लिखिए।

खंड - क

[अपठित अंश]

प्र. 1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए : (1×2=2) (2×4=8) [10]

महात्माओं और विद्वानों का सबसे बड़ा लक्षण है- आवाज़ को ध्यान से सुनना। यह आवाज़ कुछ भी हो सकती है। कौओं की कर्कश आवाज़ से लेकर नदियों की छलछल तक। मार्टिन लूथर किंग के भाषण से लेकर किसी पागल के बड़बड़ाने तक। अमूमन ऐसा होता नहीं। सच यह है कि हम सुनना चाहते ही नहीं। बस बोलना चाहते हैं। हमें लगता है कि इससे लोग हमें बेहतर तरीके से समझेंगे। हालांकि ऐसा होता नहीं। हमें पता ही नहीं चलता और अधिक बोलने की कला हमें अनसुना करने की कला में पारंगत कर देती है। मनोवैज्ञानिक ने अपने अध्ययन में पाया कि जिन घरों के अभिभावक ज्यादा बोलते हैं, वहाँ बच्चों में सही-गलत से जुड़ा स्वाभाविक ज्ञान कम विकसित हो

पाता है, क्योंकि ज्यादा बोलना बातों को विरोधाभासी तरीके से सामने रखता है और सामने वाला बस शब्दों के जाल में फँसकर रह जाता है। बात औपचारिक हो या अनौपचारिक, दोनों स्थिति में हम दूसरे की न सुन, बस हावी होने की कोशिश करते हैं। खुद ज्यादा बोलने और दूसरों को अनसुना करने से जाहिर होता है कि हम अपने बारे में ज्यादा सोचते हैं और दूसरों के बारे में कम। ज्यादा बोलने वालों के दुश्मनों की भी संख्या ज्यादा होती है। अगर आप नए दुश्मन बनाना चाहते हैं, तो अपने दोस्तों से ज्यादा बोलें और अगर आप नए दोस्त बनाना चाहते हैं, तो दुश्मनों से कम बोलें। अमेरिका के सर्वाधिक चर्चित राष्ट्रपति रूजवेल्ट का अपने माली तक के साथ कुछ समय बिताते और इस दौरान उनकी बातें ज्यादा सुनने की कोशिश करते। वह कहते थे कि लोगों को अनसुना करना अपनी लोकप्रियता के साथ खिलवाड़ करने जैसा है। इसका लाभ यह मिला कि ज्यादातर अमेरिकी नागरिक उनके सुख में सुखी होते, और दुख में दुखी।

1. अनसुना करने की कला क्यों विकसित होती है?

   उत्तर : सच यह है कि हम सुनना चाहते ही नहीं। बस बोलना चाहते हैं। हमें लगता है कि इससे लोग हमें बेहतर तरीके से समझेंगे। हालांकि ऐसा होता नहीं। हमें पता ही नहीं चलता और अधिक बोलने की कला हमें अनसुना करने की कला में पारंगत कर देती है।

2. अधिक बोलने वाले अभिभावकों का बच्चों पर क्या प्रभाव पड़ता है और क्यों?

   उत्तर : अधिक बोलने वाले अभिभावकों के वहाँ बच्चों में सही-गलत से जुड़ा स्वाभाविक ज्ञान कम विकसित हो पाता है, क्योंकि ज्यादा बोलना बातों को विरोधाभासी तरीके से सामने रखता है और सामने वाला बस शब्दों के जाल में फँसकर रह जाता है।

3. अधिक बोलना किन बातों का सूचक है?

उत्तर : अधिक बोलना इस बात का सूचक है कि हम अपने बारे में ज्यादा सोचते हैं और दूसरों के बारे में कम।

4. रूजवेल्ट की लोकप्रियता का क्या कारण बताया गया है?

उत्तर : अमेरिका के सर्वाधिक चर्चित राष्ट्रपति रूजवेल्ट का अपने माली तक के साथ कुछ समय बिताते और इस दौरान उनकी बातें ज्यादा सुनने की कोशिश करते और यही उनकी लोकप्रियता का कारण था।

5. अनुच्छेद का मूल भाव तीन-चार वाक्यों में लिखिए।

उत्तर : इस अनुच्छेद का मूल भाव यह है कि हमें दूसरों की बातों को भी ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए जिससे हम बेहतर मित्र और लोकप्रिय भी हो सकते हैं।

6. उपर्युक्त गद्यांश को उचित शीर्षक दीजिए।

उत्तर : उपर्युक्त गद्यांश के लिए उचित शीर्षक 'बोलने की कला' है।

खंड - ख

[व्यावहारिक व्याकरण]

प्र. 2. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x4=[4]

(क) वह दुबला-पतला ताकतवर है। (मिश्र वाक्य में बदलिए)

उत्तर : यद्यपि वह दुबला–पतला है तथापि वह ताकतवर है।

(ख) नीचे गिरने के कारण फूलदान टूट गया। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : फूलदान नीचे गिरा और टूट गया।

(ग) गली में शोर होने पर सब लोग बाहर आ गए। (संयुक्त वाक्य में बदलिए)

उत्तर : गली में शोर हुआ और सब लोग बाहर आ गए।

(घ) वह बाजार गया, क्योंकि उसे पुस्तकें खरीदनी थीं। (रचना की दृष्टि से वाक्य का प्रकार बताइए।)

उत्तर : संयुक्त वाक्य

प्र. 3. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित पदों का परिचय दीजिए: 1x4=[4]

(क) मैं पिछले साल उसे खारघर में मिला था।

उत्तर : उसे- पुरुषवाचक सर्वनाम, (अन्य) पुल्लिंग, एवं स्त्रीलिंग दोनों में संभव, एकवचन कर्मकारक।

(ख) माँ ने पुत्र को बुरी तरह मारा।

उत्तर : मारा- सकर्मक क्रिया, पुल्लिंग, एकवचन, भूतकाल।

(ग) परिश्रम सफलता की कुंजी है।

उत्तर : परिश्रम- भाववाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, 'सफलता' विशेष्य का विशेषण।

(घ) रमा पत्र लिखती है।

उत्तर : पत्र- जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुल्लिंग, कर्मकारक।

प्र. 4. निर्देशानुसार उत्तर दीजिए: 1x4=[4]

1. भूकंप-पीडितों को सहायता दी। (भाववाच्य में बदलिए)

उत्तर : भूकंप-पीडितों को सहायता दी गई।

2. उज्जैनवासियों द्वारा इस सभा का आयोजन किया जाता है। (कर्तृवाच्य में बदलिए)

   उत्तर : उज्जैनवासी इस सभा का आयोजन करते हैं।

3. मैं इतनी गरमी में सो नहीं सकता। (भाववाच्य में बदलिए)

   उत्तर : मुझसे इतनी गरमी में सोया नहीं जाता।

4. माता ने बच्चों को प्यार किया। (कर्मवाच्य में बदलिए)

   उत्तर : माता द्वारा बच्चों को प्यार किया गया।

प्र. 5. निम्नलिखित काव्यांशों में प्रयुक्त रस पहचानिए: 1x4=[4]

1. धुरी भरे अति सोभित स्यामजू,तैसी बनी सर सुंदर चोटी।

   उत्तर : वात्सल्य रस

2. हाय राम कैसे झेलें हम अपनी लज्जा अपना शोक
   गया हमारे ही हाथों से अपना राष्ट्र पिता परलोक

   उत्तर : करुण रस

3. देख यशोदा शिशु के मुख में, सकल विश्व की माया
   क्षणभर को वह बनी अचेतन, हिल न सकी कोमल काया

   उत्तर : अद्भुत रस

4. बाल-दसा-सुख निरखि जसोदा, पुनि-पुनि नन्द बुलावति।
   अँचरा तर लै ढाँकि, 'सूर' के प्रभु कौ दुध पियावति।।

   उत्तर : वात्सल्य रस

खंड - ग

[पाठ्य पुस्तक एवं पूरक पुस्तक]

प्र. 6. निम्नलिखित गद्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर लिखिए : 2+2+2=[6]

शीला अग्रवाल ने साहित्य का दायरा ही नहीं बढ़ाया था बल्कि घर की चारदीवारी के बीच बैठकर देश की स्थितियों को जानने-समझने का जो सिलसिला पिता जी ने शुरू किया था, उन्होंने वहाँ से खींचकर उसे भी स्थितियों की सक्रिय भागीदारी में बदल दिया। सन् 46-47 के दिन...वे स्थितियाँ, उसमें वैसे भी घर में बैठे रहना संभव था भला? प्रभात-फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस, भाषण हर शहर का चरित्र था और पूरे दमखम और जोश-खरोश के साथ इन सबसे जुड़ना हर युवा का उन्माद। मैं भी युवा थी और शीला अग्रवाल की जोशीली बातों ने रगों में बहते खून को लावे में बदल दिया था। स्थिति यह हुई कि एक बवंडर शहर में मचा हुआ था और एक घर में। पिता जी की आज़ादी की सीमा यहीं तक थी कि उनकी उपस्थिति में घर में आए लोगों के बीच उठूँ-बैठूँ, जानूँ-समझूँ। हाथ उठा-उठाकर नारे लगाती, हड़तालें करवाती, लड़कों के साथ शहर की सड़कें नापती लड़की को अपनी सारी आधुनिकता के बावजूद बर्दाश्त करना उनके लिए मुश्किल हो रहा था तो किसी की दी हुई आज़ादी के दायरे में चलना मेरे लिए। जब रगों में लहू की जगह लावा बहता हो तो सारे निषेध, सारी वर्जनाएँ और सारा भय कैसे ध्वस्त हो जाता है, यह तभी जाना और अपने क्रोध से सबको थरथरा देने वाले पिता जी से टक्कर लेने का जो सिलसिला तब शुरू हुआ था, राजेंद्र से शादी की, तब तक वह चलता ही रहा।

1. देश की स्थितियों को समझने-जानने की प्रेरणा लेखिका को किसने दी?

   उत्तर : देश की स्थितियों को समझने-जानने की प्रेरणा लेखिका को उनके पिता ने दी।

2. 'सन् 46-47' के दिनों में क्या था?

उत्तर : सन् 46-47 के दिनों में घर में बैठना असंभव था। प्रभात-फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस, भाषण हर शहर का चरित्र था और पूरे दमखम और जोश-खरोश के साथ इन सबसे जुड़ना हर युवा का उन्माद था।

3. 'खून को लावे में बदल दिया' का क्या आशय है?

उत्तर : 'खून को लावे में बदल दिया' का आशय खून में अत्यधिक जोश से है। यहाँ कहने का तात्पर्य यह है कि लेखिका कि अध्यापिका शीला अग्रवाल कि जोशीले बातों लेखिका में अत्याधिक जोश भर दिया था।

प्र. 7. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=[8]

1. शहनाई की दुनिया में डुमराँव को क्यों याद किया जाता है?

उत्तर : मशहूर शहनाई वादक "बिस्मिल्ला खाँ" का जन्म डुमराँव गाँव में ही हुआ था। इसके अलावा शहनाई बजाने के लिए रीड का प्रयोग होता है। रीड अंदर से पोली होती है, जिसके सहारे शहनाई को फूँका जाता है। रीड, नरकट से बनाई जाती है जो डुमराँव में मुख्यत: सोन नदी के किनारे पाई जाती है। इसी कारण शहनाई की दुनिया में डुमराँव का महत्त्व है।

2. नवाब साहब ने बहुत ही यत्न से खीरा काटा, नमक-मिर्च बुरका, अंतत: सूँघकर ही खिड़की से बाहर फेंक दिया। उन्होंने ऐसा क्यों किया होगा? उनका ऐसा करना उनके कैसे स्वभाव को इंगित करता है?

उत्तर : नवाब साहब द्वारा दिए गए खीरा खाने के प्रस्ताव को लेखक ने अस्वीकृत कर दिया। खीरे को खाने की इच्छा तथा सामने वाले यात्री के सामने अपनी झूठी साख बनाए रखने के उलझन में नवाब

साहब ने खीरा खाने की सोची परन्तु जीत नवाब के दिखावे की हुई। और इसी इरादे से नवाब साहब ने खीरा सूँघ कर फेंक दिया। नवाब के इस स्वभाव से ऐसा प्रतीत होता है कि वो दिखावे की जिंदगी जीते हैं। खुद को अमीर सिद्ध करने के लिए वो कुछ भी कर सकते हैं।

3. इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?

उत्तर : 'भटियारखाना' शब्द भट्टी (चूल्हा) से बना है। यहाँ पर प्रतिभाशाली लोग नहीं जाते हैं लेखिका के पिता का मानना था रसोई के काम में लग जाने के कारण लड़कियों की क्षमता और प्रतिभा नष्ट हो जाती है। वे पकाने-खाने तक ही सीमित रह जाती हैं और अपनी सही प्रतिभा का उपयोग नहीं कर पातीं। संभवतः इसलिए लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर संबोधित किया होगा।

4. शहर के मुख्य बाज़ार में प्रतिमा किसने लगवाईं थी और उस प्रतिमा की क्या विशेषता थी?

उत्तर : शहर के मुख्य बाज़ार के मुख्य चौराहे पर नगरपालिका के किसी उत्साही बोर्ड या प्रशासनिक अधिकारी ने नेताजी सुभाषचंद्र बोस की एक संगमरमर की प्रतिमा लगवा दी थी।

उस मूर्ति की विशेषता यह थी कि मूर्ति संगमरमर की थी। टोपी की नोक से कोट के दूसरे बटन तक कोई दो फुट ऊँची और सुंदर थी। नेताजी फौजी वर्दी में सुंदर लगते थे। मूर्ति को देखते ही 'दिल्ली चलो' और तुम मुझे खून दो... आदि याद आने लगते थे। केवल एक चीज की कसर थी जो देखते ही खटकती थी नेताजी की

आँख पर संगमरमर चश्मा नहीं था बल्कि उसके स्थान पर सचमुच के चश्मे का चौड़ा काला फ्रेम मूर्ति को पहना दिया गया था।

5. फ़ादर की मृत्यु किस प्रकार हुई? लेखक उनकी मृत्यु से संतुष्ट क्यों नहीं था?

   उत्तर : फ़ादर की मृत्यु गैंग्रीन नामक रोग से हुई। इस रोग में शरीर के अंदर एक जहरीला फोड़ा हो जाता है। इसमें बहुत अधिक यातना होती है।

   लेखक ने फ़ादर के जीवन को करीब से देखा था। उन्होंने फ़ादर को लोगों में त्याग, वात्सल्य, ममता और करुणा के अमृत को ही बाँटते देखा था इसलिए ऐसे व्यक्ति की मृत्यु तो बड़ी शांत होनी चाहिए थी न कि असह्य पीड़ा से और इसी कारण लेखक फ़ादर की इस यातनामय मृत्यु से संतुष्ट नहीं थे।

प्र. 8. निम्नलिखित काव्यांश पर आधारित प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2+2+2=[6]

यश है न वैभव है, मान है न सरमाया
जितना ही दौड़ा तू उतना ही भरमाया।
प्रभुता का शरण-बिंब केवल मृगतृष्णा है,
हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है।
जो है यथार्थ कठिन उसका तू कर पूजन-
छाया मत छूना मन, होगा दुख दूना।

1. कवि जीवन में क्या कुछ पाने के लिए दौड़ता फिरा?

   उत्तर : कवि जीवन में यश, वैभव और मान-सम्मान पाने के लिए दौड़ता फिरा।

2. उपर्युक्त काव्य-पंक्तियों में कवि ने किसे मृगतृष्णा कहा है?

उत्तर : इन पंक्तियों में कवि ने प्रभुता अर्थात् अधिकार को मृगतृष्णा कहा है।

3. 'हर चंद्रिका में छिपी एक रात कृष्णा है' - का आशय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर : यहाँ कवि के कहने का तात्पर्य यह है कि प्रत्येक सुख के साथ के साथ दु:ख भी लगा हुआ है। हर खुशी के बाद उदासी भी आती है। यदि आज हमें सुख मिलता है तो कल दु:ख का सामना भी अवश्य ही करना है। अत: सुख के पीछे भावना व्यर्थ है।

प्र. 9. निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए: 2x4=[8]

1. उद्धव द्वारा दिए गए योग के संदेश ने गोपियों की विरहाग्नि में घी का काम कैसे किया?

उत्तर : गोपियाँ कृष्ण के आगमन की आशा में दिन गिनती जा रही थीं। वे अपने तन-मन की व्यथा को चुपचाप सहती हुई कृष्ण के प्रेम रस में डूबी हुई थीं। वे इसी इंतजार में बैठी थीं कि श्री कृष्ण उनके विरह को समझेंगे, उनके प्रेम को समझेंगे और उनके अतृप्त मन को अपने दर्शन से तृप्त करेंगे। परन्तु यहाँ सब उल्टा होता है। कृष्ण को न तो उनकी पीड़ा का ज्ञान है और न ही उनके विरह के दुःख का। कृष्ण ने योग का संदेश देने के लिए उद्धव को भेज दिया। विरह की अग्नि में जलती हुई गोपियों को जब उद्धव ने कृष्ण को भूल जाने और योग-साधना करने का उपदेश देना प्रारम्भ किया, तब उनके हृदय में जल रही विरहाग्नि में घी का काम कर उसे और प्रज्वलित कर दिया।

2. बच्चे की मुसकान और एक बड़े व्यक्ति की मुसकान में क्या अंतर है?

उत्तर : बच्चे तथा बड़े व्यक्ति की मुसकान में निम्नलिखित अंतर होते हैं-

- बच्चे अबोध होते हैं। बच्चों की हँसी में निश्छलता होती है लेकिन बड़ों की मुस्कुराहट कृत्रिम भी होती है।
- बच्चे मुस्कुराते समय किसी खास मौके की प्रतीक्षा नहीं करते हैं वे तो बस...अपनी स्वाभाविक मुसकान बिखेरना जानते हैं।
- बड़े व्यक्ति परिपक्व बुद्धि के होते हैं। जबकि बड़ों के मुसकुराने की खास वजह होती है।
- बच्चों का मुस्कुराना सभी को प्रभावित करता है परन्तु बड़ों की मुसकान वैसा आकर्षण नहीं रखती।

3. फसल को 'हाथों के स्पर्श की गरिमा' और 'महिमा' कहकर कवि क्या व्यक्त करना चाहता है?

उत्तर : फसल के लिए भले ही पानी, मिट्टी, सूरज की किरणें तथा हवा जैसे तत्वों की आवश्यकता है। परन्तु किसानों के परिश्रम के बिना ये सभी साधन व्यर्थ हैं। यदि किसान अपने परिश्रम के द्वारा इसे भली प्रकार से नहीं सींचे तब तक इन सब साधनों की सफलता नहीं होगी। अत: यह किसान के श्रम की गरिमा ही है जिसके कारण फसलें इतनी अधिक बढ़ती चली जाती हैं।

4. संगतकार के माध्यम से कवि किस प्रकार के व्यक्तियों की ओर संकेत करना चाह रहा है?

उत्तर : संगतकार के माध्यम से कवि किसी भी कार्य अथवा कला में लगे सहायक कर्मचारियों और कलाकारों की ओर संकेत कर रहा है। जैसे संगतकार मुख्य गायक के साथ मिलकर उसके सुरों में अपने सुरों

को मिलाकर उसके गायन में नई जान फूँकता है और उसका सारा श्रेय मुख्य गायक को ही प्राप्त होता है।

5. कविता में वस्त्रों और आभूषणों को शाब्दिक-भ्रम क्यों कहा गया है?

उत्तर : प्रस्तुत कविता 'कन्यादान' में माँ अपनी बेटी को सीख देते हुए कहती है कि वस्त्र और आभूषणों के भ्रमजाल में मत फँसना। वास्तव में वस्त्र और आभूषण उसके लिए बंधन के समान हैं। इसके माया-जाल में फँसकर स्त्री बहुत दुःख उठाती है अतः वह अपनी बेटी को इनसे दूर रहने की सलाह देती है।

प्र. 10. निम्नलिखित पूरक पुस्तिका के प्रश्नों में से किन्हीं दो प्रश्नों का उत्तर लगभग 50-60 शब्दों में लिखिए। 3×2=[6]

1. साना साना हाथ जोडि रचना प्रदूषण के कारण स्नोफॉल में कभी का जिक्र किया गया है, प्रदूषण के कौन-कौन से दुष्परिणाम सामने आए है लिखें।

उत्तर : आज की पीढ़ी के द्वारा प्रकृति को प्रदूषित किया जा रहा है। प्रदूषण का मौसम पर असर साफ दिखाई देने लगा है। प्रदूषण के कारण वायुमण्डल में कार्बनडाइऑक्साइड की अधिकता बढ़ गई है जिसके कारण वायु प्रदूषित होती जा रही है। इससे साँस की अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न होने लगी है। जलवायु पर भी इसका बुरा प्रभाव देखने को मिल रहा है जिसके कारण कहीं पर बारिश की अधिकता हो जाती है तो किसी स्थान पर सूखा पड़ जाता है। कहीं पर बारिश नाममात्र की होती है जिस कारण गर्मी में कमी नहीं होती। गर्मी के मौसम में गर्मी की अधिकता देखते बनती है। कई बार तो पारा अपने सारे रिकार्ड को तोड़ चुका होता है। सर्दियों के समय में या तो कम सर्दी पड़ती है या कभी

सर्दी का पता ही नहीं चलता। ये सब प्रदूषण के कारण ही सम्भव हो रहा है। ध्वनि प्रदूषण से मनुष्य में कान सम्बन्धी रोग हो रहे हैं। जलप्रदूषण के कारण स्वच्छ जल पीने को नहीं मिल पा रहा है और पेट सम्बन्धी अनेकों बीमारियाँ उत्पन्न हो रही हैं।

2. बच्चे बारात का जुलूस किस प्रकार निकालते थे?

उत्तर : बच्चे जब बारात का जुलूस निकालते तो कनस्तर का तबूरा बजाते। अमोले को घिसकर शहनाई बजाई जाती, टूटी चूहेदानी की पालकी बनती, लेखक स्वयं समधी बनकर बकरे पर चढ़ जाते थे। बारात चबूतरे के कोने से दूसरे कोने में जाकर वधू के द्वार पर रुकती। वहाँ काठ की पटरियों से घिरे, गोबर से लिपे, आम और केले की टहनियों से सजाए हुए छोटे से आँगन में कुल्हिए का कलसा रखा रहता था। वहीं पहुँचकर दुल्हन को लाल कपड़े से ढकी पालकी पर बैठा दिया जाता था।

3. 'कोई भी नाक फिट होने काबिल नहीं निकली'- कथन के व्यंग्य को स्पष्ट करें।

उत्तर : जॉर्ज पंचम की नाक को लगवाने के लिए भारत देश के सभी नेताओं की नाकें नापी गईं। सन् 1942 में बिहार के सेक्रेटरियट के सामने शहीद हुए बच्चों की स्थापित मूर्तियों की नाक को भी नापा गया परंतु वे भी बड़ी निकली। इस कथन से लेखक के कहने का अभिप्राय यह है कि जॉर्ज पंचम की नाक हमारे देश के सभी नेताओं यहाँ तक कि बच्चों की नाक के सामने भी एकदम नगण्य है।

खंड - घ

[लेखन]

प्र. 11. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर 200 से 250 शब्दों में निबंध लिखिए: [10]

जीवन में गुरु का महत्त्व

गुरुब्रह्मा गुरुविर्ष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः

गुरु की महिमा का पूरा वर्णन वास्तव में कोई नहीं कर सकता। क्योंकि गुरु की महिमा तो ईश्वर से भी कहीं अधिक है। गुरु को ईश्वर का दर्जा प्राप्त है।

गुरु के महत्त्व पर तुलसीदास ने भी रामचरितमानस में लिखा है -

गुर बिनु भवनिधि तरइ न कोई।

जों बिरंचि संकर सम होई।।

भले ही कोई ब्रह्मा, शंकर के समान क्यों न हो, वह गुरु के बिना भव सागर पार नहीं कर सकता। धरती के आरंभ से ही गुरु की अनिवार्यता पर प्रकाश डाला गया है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों, रामायण, गीता, गुरुग्रन्थ साहिब आदि सभी धर्मग्रन्थों एवं सभी महान संतों द्वारा गुरु की महिमा का गुणगान किया गया है। गुरु और भगवान में कोई अंतर नहीं है।

संस्कृत के शब्द गु का अर्थ है अन्धकार, रु का अर्थ है उस अंधकार को मिटाने वाला। आत्मबल को जगाने का काम गुरु ही करता है। गुरु अपने आत्मबल द्वारा शिष्य में ऐसी प्रेरणाएँ भरता है, जिससे कि वह अच्छे मार्ग पर चल सके। हमारे सभ्य सामाजिक जीवन का आधार स्तंभ गुरू हैं। कई ऐसे गुरू हुए हैं, जिन्होंने अपने शिष्य को इस तरह शिक्षित किया कि उनके शिष्यों ने राष्ट्र की धारा को ही बदल दिया। आध्यात्मिक शांति, धार्मिक ज्ञान और सांसारिक निर्वाह सभी के लिए गुरू का दिशा निर्देश बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। गुरु केवल एक शिक्षक ही नहीं है, अपितु वह व्यक्ति को

जीवन के हर संकट से बाहर निकलने का मार्ग बताने वाला मार्गदर्शक भी है। गुरु का दर्जा भगवान के बराबर माना जाता है क्योंकि गुरु, व्यक्ति और सर्वशक्तिमान के बीच एक कड़ी का काम करता है। जीवन में गुरू के महत्त्व का वर्णन कबीर दास जी ने अपने दोहों में पूरी आत्मीयता से किया है।

गुरू गोविन्द दोऊ खडे का के लागु पाँव,
बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।

आज के आधुनिक युग में भी गुरु की महत्ता में जरा भी कमी नहीं आयी है। एक बेहतर भविष्य के निर्माण हेतु आज भी गुरु का विशेष योगदान आवश्यक होता है।

बढ़ती प्रदूषण समस्या और उसके समाधान

आज के विज्ञान-युग में प्रदूषण की समस्या एक बड़ी चुनौती है। प्रदूषण का अर्थ है - वायुमंडल या वातावरण का दूषित होना। प्रदूषण कई तरह का होता है - जल प्रदूषण, वायु प्रदूषण और ध्वनि प्रदूषण, रासायनिक आदि। उद्योगों के विस्तार के कारण प्रदूषण और भी अधिक बढ़ा है। जहरीले पदार्थ, झीलों, झरनों, नदियों, सागरों तथा अन्य जलाशयों में जाते हैं तो इससे पानी प्रदूषित हो जाता है, उसकी गुणता घट जाती है। इसके अलावा नदी-तालाबों में लोगों का नहाना, कपड़े धोना, जानवरों की गंदगी डालने के कारण जल प्रदूषित होता है जिससे तरह-तरह के रोग फैलते हैं।

वायु में हानिकारक पदार्थों को छोड़ने से वायु प्रदूषित हो जाती है। यह स्वास्थ्य समस्या पैदा करती है तथा पर्यावरण एवं संपत्ति को नुकसान पहुँचाती है। इससे ओजोन पर्त में बदलाव आया है जिससे मौसम में परिवर्तन हो गया है।

मशीन, रेलगाडियाँ, पटाखे, रेडियो व लाउड-स्पीकर तेज़ी से बजाना आदि से ध्वनि प्रदूषण फैलता हैं। ध्वनि प्रदूषण नींद, सुनना, संवाद यहाँ तक शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करते हैं।

हम प्रदूषण को रोकने के लिए कुछ निम्न उपायों को अपना सकते हैं जैसे- ध्वनि प्रदूषण को रोकने के लिए घर में टी.वी., संगीत संसाधनों की आवाज धीमी रखें, कार का हार्न अनावश्यक न बजायें, लाउड स्पीकर का प्रयोग न करें, शादी विवाह में बैंड-बाजे-पटाखे आदि व्यवहार में न लाऐं।

वायु प्रदूषण से बचने के लिए - घर, फैक्ट्री, वाहन के धुँए को सीमा में रखें, पटाखों का इस्तेमाल न करें, कूड़ा-कचरा जलाऐं नहीं, नियत स्थान पर डालें, जरूरी हो तो थूकने के लिए बहती नालियों या थूकदान का इस्तेमाल करें।

जल प्रदूषण से बचने के लिए - नालों-कुओं-तालाबों-नदियों में गंदगी न, सार्वजनिक जल वितरण के साथ छेड़छाड़ न करें, विसर्जन नियत स्थान पर ही करें, पानी की एक भी बूँद बर्बाद न करें।

रासायनिक प्रदूषण से बचने के लिए- रासायनिक की जगह जैविक खाद, प्लास्टिक की जगह कागज, पोलिस्टर की जगह सूती कपड़े या जूट आदि का इस्तेमाल करें, प्लास्टिक की थैलियाँ आदि रास्ते में न फेंकें, ज्यादा से ज्यादा पेड़-पौधे, हरियाली लगाए।

अत: हम सबको मिलकर प्रदूषण को बढ़ने से रोकना होगा अन्यथा आनेवाले वर्षो में हमारा जीवन दूभर हो जाएगा।

प्र. 12. निम्न विषयों में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन करें। [5]

गलत जन्मतिथि में सुधार करने के संबंध में शिक्षाधिकारी को 80 से 100 शब्दों में प्रार्थना पत्र लिखिए।

सुधीर देसाई,

20, विद्यानगर

कुडाल

दिनाँक: 14 जून xx

सेवा में,

शिक्षाधिकारी,

माध्यमिक शिक्षण विभाग,

जिला परिषद,

सिंधुदुर्ग।

विषय - गलत जन्मतिथि में सुधार करने के संबंध में।

(द्वारा - माननीय प्रधानाध्यापिका, न्यू इंगिलश स्कूल, कूडाल।)

महोदय,

सविनय निवेदन है कि मैं सुधीर, न्यू इंग्लिश स्कूल, कुडाल का छात्र हूँ। मेरी जन्मतिथि विद्यालय के रिकार्ड में गलत लिखी गई है। विद्यालय के रिकार्ड के अनुसार मेरी जन्मतिथि 21 फरवरी 2000 है जबकि मेरी सही जन्मतिथि 24 फरवरी 1999 है। प्रमाण के तौर पर मैं नगरपालिका द्वारा जारी जन्मतिथि प्रमाण-पत्र भेज रहा हूँ।

मेरी हाईस्कूल की परीक्षा भी निकट आ गई है। मैं चाहता हूँ कि दसवीं की परीक्षा में बैठने से पहले रिकार्ड में मेरी सही जन्मतिथि दर्ज हो जाए, ताकि बाद में इस बारे में कोई झंझट न हो। अतः आपसे प्रार्थना है कि आप शीघ्र ही मेरी जन्मतिथि में सुधार करने की कृपा करें। साथ ही संबंधित सूचना मेरे विद्यालय के कार्यालय में भी भिजवाने की कृपा करें।

इसके लिए मैं आपका अति आभारी रहूँगा।

कष्ट के लिए क्षमा।

धन्यवाद।

भवदीय

सुधीर देसाई

अथवा

आपका छोटा भाई पढ़ाई में बिलकुल ध्यान नहीं दे रहा है। वह न तो विद्यालय में पढ़ता है और न घर पर। इस बार परीक्षा में उसके अंक भी बहुत कम आए हैं। अतः पढ़ाई का महत्त्व समझाते हुए 80 से 100 शब्दों में पत्र लिखिए।

जोसेफ़ एंड मेरी स्कूल

ब्लाक-एन, अलीपुर

पश्चिम बंगाल - 42

दिनाँक: 15 जुलाई 20xx

प्रिय अजय

चिरंजीव रहो।

कल ही पिता जी का पत्र प्राप्त हुआ। उस पत्र को पढ़कर पता चला कि तुम अधिकांश समय खेलकूद में तथा मित्रों के साथ व्यर्थ के वार्तालाप में नष्ट कर देते हो। यह उचित नहीं है। मन को एकाग्र करके पढ़ाई की ओर ध्यान दो। अपनी दिनचर्या नियमित करो और हर क्षण अपने लक्ष्य पर दृष्टि रखो। तुम्हें ज्ञात होगा कि जितने भी महान व्यक्ति हुए हैं, उन्होंने अपने जीवन के एक क्षण को भी व्यर्थ नहीं जाने दिया। प्रिय अजय याद रखो, समय संसार का सबसे बड़ा शासक है। समय का मूल्य समझना है। यह बात ठीक है कि जीवन में मनोरंजन का भी महत्त्व है, पर मेहनत का पसीना बहाने के बाद।

यदि तुम एकाग्र मन से नहीं पढ़ोगे, तो परीक्षा में असफल होने के कारण तुम्हारा भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा। अपना ध्यान पढ़ाई में लगाओ।

इसी आशा के साथ पत्र समाप्त करता हूँ कि तुम मेरी बातों पर ध्यान केंद्रित करोगे और आगामी परीक्षा में हमें तुम निराश नहीं करोगे।

तुम्हारा अग्रज

रोनित

प्र. 13. निम्नलिखित विषयों में से किसी एक विषय पर 25 से 30 शब्दों में विज्ञापन तैयार कीजिए। [5]

1. साइकिल का विज्ञापन तैयार कीजिए।

रोमी साइकिल

बचपन का लेना है पूरा मज़ा ?

रोमी साइकिल है एक वजह।

2. आरोग्य सेवा संबंधी एक वैद्य द्वारा दिए गए विज्ञापन का प्रारूप (नमूना) तैयार कीजिए:

आयुर्वेद का क्रांतिकारी अविष्कार

क्या आप किसी भी तरह की बीमारी से परेशान हैं?

तो मिलिए हमारे निष्णात वैद्य से।

करवाइए अपनी बीमारी का सटीक और अचूक इलाज।

आर.के.आयुर्वेद

संपर्क करें – ०२११११२२१